आश्रय की कहानी: एक सपना, एक संकल्प, एक विरासत

जब दर्द ने जन्म दिया एक सपने को

26 जनवरी 1957, भागलपुर के सदर अस्पताल में जन्मे डॉ. हेमशंकर शर्मा की जिंदगी में वह रात आज भी याद है। रात के 11 बजे, उनकी माँ बीमार थीं, और एक छोटा बच्चा अपने पिता के साथ दर-दर भटक रहा था - एक डॉक्टर की तलाश में। हर दरवाजे पर एक ही जवाब मिला: "रात का समय है, मैं अकेले नहीं आऊंगा। सुबह आ जाना।"

उस रात के दर्द ने एक बच्चे के मन में एक संकल्प पैदा किया - "मैं चिकित्सक बनूंगा। और जब भी कोई मुझे बुलाएगा, मैं जरूर जाऊंगा।"

संघर्ष से सफलता तक का सफर

मध्यम वर्गीय परिवार से आने वाले हेमशंकर के पिता ने कभी शिक्षा में कमी नहीं आने दी। सीएमएस स्कूल से शुरुआत हुई, 1972 में मैट्रिक फर्स्ट डिवीजन में पास किया। जब रांची मेडिकल कॉलेज में सेलेक्शन हुआ, तो उन्हें अपने पिता की आर्थिक स्थिति का ख्याल आया।

नवस्थापित भागलपुर मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. गंगाधर दास से मिलकर उन्होंने अपना निर्णय लिया। वे भागलपुर में ही रहे, और 1975 में यहीं से मेडिकल की पढ़ाई शुरू की। उस समय फीस थी मात्र ₹11-12, और छात्रवृत्ति मिलती थी ₹40 की।

1981 में जब वे गोल्ड मेडलिस्ट बनकर निकले, तो उनका सपना सिर्फ डॉक्टर बनना नहीं था - वे गुरु बनना चाहते थे, मार्गदर्शक बनना चाहते थे।

गुरुकुल की परंपरा

डॉ. शर्मा ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज से पोस्ट ग्रेजुएशन किया और फिर भागलपुर मेडिकल कॉलेज में प्रिवेंटिव मेडिसिन डिपार्टमेंट में प्रोफेसर बन गए। लेकिन उनका असली गुरुकुल था उनका घर - जहाँ दरी बिछाकर वे छात्रों को मुफ्त में पढ़ाते थे। आज उन्हीं में से 50 से अधिक डॉक्टर इसी शहर में प्रैक्टिस कर रहे हैं।

आश्रय का जन्म: एक पत्नी का सपना, एक डॉक्टर का संकल्प

जब डॉ. शर्मा मरीजों को रेफर करते थे, तो उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती थी। उन्हें लगता था कि उनके पास अगर अपनी जगह हो, तो वे बेहतर इलाज कर सकते हैं। शुरुआत हुई दो कमरों से। लेकिन वह काफी नहीं था।

सामने पड़ी खाली जमीन में मोहल्ले का कचरा गिरता था। उस जमीन के मालिक डॉ. शर्मा के मरीज थे - दो बार गंभीर हार्ट अटैक से बचाए गए थे। कृतज्ञता और विश्वास के चलते, उन्होंने वह जमीन मात्र 10% कीमत पर डॉ. शर्मा को दे दी।

डॉ. शर्मा की पत्नी, जो एक IAS अधिकारी की बेटी थीं, ने बड़े घर को छोड़कर इस सपने को अपनाया। उन्होंने ही इस संस्थान का नाम रखा - **"आश्रय"** - जहाँ हर व्यक्ति को आश्रय मिले, हर परिवार को सहारा मिले।

लोन लेकर, दोस्तों से मदद लेकर, एक साल में दो मंजिला आश्रय तैयार हो गया।

80-90 के दशक: रात 2 बजे तक खुला क्लिनिक

डॉ. शर्मा का क्लिनिक उन लोगों के लिए खुला रहता था जो रात में कहीं नहीं जा पाते थे। दिन में कॉलेज में पढ़ाते, शाम को क्लिनिक, और रात 1-2 बजे तक मरीज देखते रहते। उनका मानना था - "अगर 10 में से 7 मरीजों को ठीक कर सको, तो पॉजिटिव रहो। लेकिन जिन्हें ठीक नहीं कर सकते, उन्हें पहले ही स्पष्ट बता दो।"

हर मरीज को वे 6-8 मिनट का समय देते थे। संख्या पर नहीं, गुणवत्ता पर विश्वास था उनका।

बच्चों का वापस लौटना: विरासत का आगे बढ़ना

डॉ. शर्मा के दोनों बेटों ने बाहर से पढ़ाई की - लगभग 13-14 साल का "वनवास"। बड़े बेटे डॉ. हिमाद्रि शंकर ने RN टैगोर अस्पताल, कोलकाता से नेफ्रोलॉजी में विशेषज्ञता हासिल की और रीनल ट्रांसप्लांट फिजिशियन के तौर पर 4 साल काम किया। छोटे बेटे डॉ. सुमित शंकर ने DM कार्डियोलॉजी की और कोलकाता मेडिका में उनका यूनिट भी था।

लेकिन दोनों ने वह सब छोड़ दिया। स्वतः स्फूर्त प्रेरणा से वापस लौटे - भागलपुर के लिए, आश्रय के लिए, अपने पिता के सपने को आगे बढ़ाने के लिए।

डॉ. शर्मा ने कभी उन्हें यहाँ आने के लिए नहीं कहा। लेकिन उन्होंने कहा - "अगर स्थानीय अस्पताल में नौकरी मिल रही है, तो करो। गरीब जनता को मुफ्त सेवाएं वहाँ दे सकोगे, और अपने क्लिनिक में भी समय दे सकोगे।"

आश्रय आज: एक पूरा परिवार, एक पूरी टीम

आज आश्रय में सिर्फ डॉक्टर नहीं, एक पूरा परिवार समर्पित है:

- डॉ. हिमाद्रि शंकर - भागलपुर के पहले और एकमात्र समर्पित नेफ्रोलॉजिस्ट, जो 3.5-4 सीरम क्रिएटिनिन को रिवर्ट करके लगभग नॉर्मल स्तर पर ले आते हैं, जहाँ डायलिसिस की कोई आवश्यकता नहीं होती
- डॉ. सुमित शंकर - इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट, जो बिना स्टेंट लगाए एंजियोप्लास्टी की नई तकनीक का उपयोग करते हैं
- बड़ी बहू - MDS प्रॉस्थोडॉन्टिक्स, फेशियल रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी
- छोटी बहू - ट्रेंड सोनोलॉजिस्ट, अपोलो और AIIMS से ट्रेनिंग, और ऑटिस्टिक बच्चों के लिए "गिग्स" नाम से ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना

100 से अधिक सहायक कर्मचारी, जिनके परिवारों को भी आश्रय में आश्रय मिला है।

एक संकल्प: गरीबों की सेवा

आश्रय में डायलिसिस की आधुनिक मशीनें हैं - पूरे बिहार के प्राइवेट सेक्टर में सिर्फ दो ऐसी मशीनें हैं, एक आश्रय में और एक पटना में। आयुष्मान योजना के आधे से अधिक मरीजों को यहाँ मुफ्त डायलिसिस मिलता है।

हार्ट अटैक के मरीजों के लिए 180 मिनट के भीतर प्राइमरी एंजियोप्लास्टी (PCI) की सुविधा - रात 2 बजे भी। और वो भी कॉर्पोरेट अस्पतालों के आधे खर्च में।

डॉ. शर्मा का नया संकल्प: 31 अक्टूबर 2024 को रिटायर होने के बाद, उन्होंने घोषणा की - "1 जनवरी से 80 वर्ष से ऊपर के सभी मरीजों को मुफ्त सेवाएं मिलेंगी। 70 वर्ष से ऊपर के मरीजों को आधी फीस।"

क्षेत्रीय सेवा का विस्तार

आज आश्रय में मरीज आते हैं:

- गोड्डा, देवघर, राजमहल (झारखंड)
- कटिहार, मुंगेर, बेगूसराय, लखीसराय (बिहार)
- आसपास के सभी जिलों से

स्थानीय डॉक्टरों में अब जागरूकता बढ़ी है। वे समझने लगे हैं - **"Time is Muscle and Time is Money"** - दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

भविष्य का सपना

डॉ. शर्मा और उनके बेटों का अगला लक्ष्य:

1. किडनी ट्रांसप्लांट सेंटर - आने वाले कुछ वर्षों में पूर्ण ट्रांसप्लांट सेंटर
2. कार्डियो-थोरेसिक सर्जरी - अगर सर्जन मिल जाएं, तो फुल फ्लेज सर्जरी + इंटरवेंशन दोनों
3. मल्टीस्पेशलिटी विस्तार - और अधिक विशेषज्ञताओं को जोड़ना

विदेश जाने के प्रस्ताव, लेकिन...

डॉ. शर्मा के छात्रों ने अमेरिका, इंग्लैंड से बुलाया। लेकिन उनका जवाब हमेशा एक ही रहा:

> "नहीं, मैं इसी जनपद के लिए हूँ। अंग प्रदेश मेरा परिवार है। यहाँ की जनता ने जो प्रेम और स्नेह दिया है, मैं उसका ऋणी हूँ। और मैं उसी को वापस करने की कोशिश करता हूँ।"

आश्रय का असली मतलब

आश्रय सिर्फ एक अस्पताल नहीं है। यह एक विचार है, एक संकल्प है, एक विरासत है।

यहाँ:

- मरीजों को आश्रय मिलता है - किसी भी समय, किसी भी स्थिति में
- परिवारों को आश्रय मिलता है - जब वे सबसे कमजोर होते हैं
- कर्मचारियों को आश्रय मिलता है - उनके परिवारों के साथ
- ऑटिस्टिक बच्चों को आश्रय मिलता है - "गिग्स" ट्रेनिंग सेंटर में
- गरीब मरीजों को आश्रय मिलता है - मुफ्त या आधी कीमत में इलाज

डॉ. हेमशंकर शर्मा का संदेश

"मेरे गुरु ने कहा था - अगर *10* में से *7* व्यक्तियों को तुम ठीक कर सको, तो बहुत पॉजिटिव रहोगे। लेकिन जिनको ठीक नहीं कर पाओ, उन्हें स्पष्ट रूप से पहले ही बता दो।

आज जब मैं अपने आश्रय को देखता हूँ - मेरे बेटे, मेरी बहुएं, *100* से अधिक कर्मचारी, हजारों संतुष्ट मरीज - मुझे लगता है कि वह रात, जब मैं और मेरे पिता दर-दर भटक रहे थे, उस रात का दर्द व्यर्थ नहीं गया।

आश्रय एक सपना था। आज यह एक वास्तविकता है। और कल यह एक विरासत होगी।"

आश्रय नर्सिंग होम**:** जहाँ हर मरीज को मिलता है आश्रय**,** हर परिवार को मिलता है सहारा।

स्थापना*: 1990* के दशक की शुरुआत
संस्थापक*:* डॉ. हेमशंकर शर्मा *(*गोल्ड मेडलिस्ट, प्रोफेसर ऑफ मेडिसिन, पूर्व प्रिंसिपल *JLNMCH)*
विरासत*:* डॉ. हिमाद्रि शंकर और डॉ. सुमित शंकर द्वारा आगे बढ़ाई जा रही है

संपर्क करें**:**
तिलकामांझी, भागलपुर - 812 001
फोन: 0641-2611778
मोबाइल क्लिनिक: +91 7739142568